INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान हाई कोर्ट

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी (4th ग्रेड)

(राजस्थान उच्च न्यायालय (जोधपुर))

RAJASTHAN HIGH COURT

सत्यमेव जयते

सत्यस्य जयोऽस्तु

भाग – 2

राजस्थान की संस्कृति एवं बोलियाँ + 1000 महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान हाई कोर्ट (चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी (4th ग्रेड)) परीक्षा**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान हाई कोर्ट** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी भर्ती परीक्षा "** में पूर्ण संभव मदद करेंगें/*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp Link- https://wa.link/l5oubd

Online Order Link - https://shorturl.at/9NIFM

मूल्य : ₹	संस्करण : नवीनतम

राजस्थान की कला संस्कृति

क्र. सं.	अध्याय	पेज नंबर
1.	राजस्थान की भाषा व राजस्थान की बोलियाँ	1
2.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	5
3.	राजस्थानी पहनावा वेशभूषा एवं आभूषण	7
4.	मेले और त्योंहार	9
5.	राजस्थान के प्रमुख दर्शनीय स्थल	20
6.	राजस्थानी साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ	32
7.	राजस्थान के लोक देवी एवं लोक देवता	36
8.	लोकसंगीत (लोकगीत)	43
9.	राजस्थान के लोक नृत्य	48
10.	वाद्ययंत्र	58
11.	लोक कलाएं (हस्त कला / चित्रकला)	66
12.	राजस्थान विविध	75
13.	1000 महत्वपूर्ण प्रश्न	97

राजस्थान की कला संस्कृति

अध्याय – 1

राजस्थान की भाषा व राजस्थान की बोलियाँ

राजस्थानी भाषा

- राजस्थान के लिए एक लोक कहावत प्रसिद्ध है कि- "पाँच कोस पर पानी बदले, सात कोस पर बाणी।"
- राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में शामिल 22 भाषाओं में शामिल नही क्या गया है । इस सम्बन्ध में सलाह देने हेतु केन्द्र सरकार ने हाल ही में एक समिति का गठन भी किया है।
- राजस्थानी भाषा राजस्थान मध्य भारत के पश्चिमी भाग, सिन्ध, पंजाब, हरियाणा के राजस्थान के निकटवर्ती क्षेत्रों में बोली जाती है।
- 21 फरवरी को राजस्थानी भाषा दिवस तथा 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- वर्तमान में राजस्थानी भाषा बोलने वालों की संख्या 11-12 करोड़ से अधिक है।
- राजस्थानी भाषा का वक्ताओं की दृष्टि से भारत में 7वाँ स्थान तथा विश्व में 16वाँ स्थान है ।
- राजस्थान की राजभाषा हिन्दी है परन्तु यहाँ की मातृभाषा राजस्थानी है।
- भाषा विज्ञान के अनुसार राजस्थानी भाषा भारोपीय भाषा परिवार के अंतर्गत आती है।
- राजस्थानी बोलियों का सर्वप्रथम वैज्ञानिक वर्गीकरण सन् 1912 ई. में सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक **"लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया" (विषयक विश्व कोष)** में किया तथा सर्वप्रथम राजस्थानी शब्द दिया।
- सन् 1914 से सन् 1918 के बीच इटली के विद्वान एल. पी. टेस्सी टोरी ने **"इण्डियन ऐन्टीक्वेरी"** नामक पत्रिका में राजस्थानी भाषा की उत्पति और विकास पर प्रकाश डाला ।
- राजस्थानी भाषा ' मुड़िया ' लिपि में लिखी जाती है।
- बिना मात्रा वाले महाजनी शब्द मोड़ कर लिखे जाते हैं जिन्हें मुड़िया अक्षर कहते है ।
- मुडियां अक्षर के आविष्कारक राजा टॉडरमल थे।
- प्राचीन समय में राजस्थान की भाषा को ' मरू ' भाषा के नाम से जाना जाता था ।
- जैन कवियों ने अपने ग्रन्थों की भाषा को मरू भाषा कहा है।
- मरू भाषा का सर्वप्रथम उल्लेख वि.सं. 835 में उद्योतन सूरी द्वारा लिखित ' **कुवलयमाला** ' में वर्णित 18 देशी भाषाओं में किया गया जो पश्चिमी राजस्थान की भाषा थी ।
- कवि कुशललाभ के ग्रन्थ **"पिंगल शिरोमणि"** तथा अबुल फजल के **"आईने अकबरी"** में **"मारवाड़ी शब्द"** का प्रयोग किया गया है
- 17वीं शताब्दी की ' नोंबोली छंद ' तथा 18वीं शताब्दी की ' आठ देशरी गुजरी ' नामक रचनाओं में भी मरू भाषा का उल्लेख हुआ है ।
- राजस्थान की कुल बोलियों की संख्या 73 है ।
- राजस्थान के सबसे अधिक क्षेत्रफल में बोली जाने वाली भाषा मारवाड़ी है ।
- राजस्थान में जनसंख्या के आधार पर सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा ढूंढाड़ी है ।

राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति, उत्पत्ति काल व स्वतंत्रकाल

उत्पत्ति

- डॉ. एल. पी. टेस्सीटोरी व महावीर प्रसाद शर्मा राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति **शौरसेनी अपभ्रंश** से मानते है ।
- डॉ. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन एवं डॉ. पुरुषोत्तम मोनारिया राजस्थानी भाषा का उत्पत्ति **नागर अपभ्रंश** से मानते है ।
- के. एम. मुंशी एवं मोतीलाल मेंनारिया राजस्थानी भाषा का उत्पत्ति **गुर्जर अपभ्रंश** से मानते है।
- सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार राजस्थानी भाषा का उत्पत्ति सौराष्ट्री अपभ्रंश से हुआ।
- गुर्जरी अपभ्रंश से ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं भाषा वैज्ञानिकी के आधार पर राजस्थानी भाषा की उत्पति मानी जाती है ।
- राजस्थानी भाषा के दो साहित्यिक रूप हैं-
  1. डिंगल 2. पिंगल

डिंगल

- यह पश्चिमी राजस्थानी का साहित्यिक रूप है।
- इसका विकास गुर्जरी अपभ्रंश से हुआ।
- इसका अधिकांश साहित्य चारण कवियों द्वारा लिखा गया।
- यह मारवाड़ी मिश्रित राजस्थानी है।
- यह शैली गीत के रूप में है।
- डिंगल की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें जो शब्द जिस तरह बोला जाता है, ठीक उसी तरह लिखा जाता है ।
- इसके ग्रंथ- राजरूपक, वचनिका राठौड़, रतनसिंह, महेसदासौत री, अचलदास खींची री वचनिका, राव जैतसी रो छंद, रुक्मणि हरण, नागदमण, सगतसिंह रासो, ढोलामारू रा दूहा ।

  डिंगल शैली के चार उपशैलियाँ है-

  (i) चारण शैली
  (ii) जैन शैली
  (iii) संत शैली
  (iv) लौकिक शैली

- डिंगल शैली का सर्वप्रथम प्रयोग कुशललाभ द्वारा रचित ' पिंगल - शिरोमणी (वि.सं. - 1607-08) ' नामक ग्रंथ में किया गया
- 1871 में जोधपुर के कविराज बांकीदास की 'कुकवि बत्तीसी ' नामक रचना में डिंगल शब्द का प्रयोग प्रथम बार किया गया ।

- रामकरण आसोपा ने डिंगल का शब्दकोष तैयार किया । राजस्थानी भाषा का पहला व्याकरण रामकरण आसोपा के द्वारा लिखा गया।

पिंगल

- पूर्वी राजस्थानी का साहित्यिक रूप है।
- इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ।
- इसका अधिकांश साहित्य भाट कवियों द्वारा लिखा गया।
- यह ब्रज मिश्रित राजस्थानी है।
- यह शैली छंद एवं पदों (काव्य) में है।
- इसके ग्रंथ- पृथ्वीराज रासौ, रतन रासौ, विजयपाल रासो, वंश भास्कर, खुमाण रासौ, राज विलास, पांडव दशेन्द्र चन्द्रिका, हम्मीर रासो व अवतार चरित्र ।

उत्पत्ति काल

- राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति मोटे तौर पर विद्वानों ने 12वीं सदी के अंतिम चरण में माना है।
- क्योंकि ' भरतेश्वर बाहुबली घोर ' तथा ' भरतेश्वर बाहुबली घोष ' जैन रचनाएं इसी समय की लिखी हुई है ।
- डॉ . एल . पी . टेस्सीटोरी के अनुसार राजस्थानी भाषा 12वीं सदी में अस्तित्व में आ चुकी थी ।
- राजस्थानी साहित्य लेखन के सर्वप्रथम प्रयास 13वीं सदी में किये गये ।
- राजस्थानी एवं गुजराती का मिला - जुला रूप 16वीं सदी के अंत तक चलता रहा ।
- 16वीं सदी के बाद राजस्थानी भाषा का विकास एक स्वतंत्र भाषा के रूप में होने लगा ।
- 17 वीं सदी के अंत तक आते - आते राजस्थानी पूर्णतः एक स्वतंत्र भाषा का रूप ले चुकी थी ।

राजस्थानी भाषा का वर्गीकरण –

- **सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन का वर्गीकरण-**
- सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन अपनी पुस्तक लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया के 9वें खण्ड में सन् 1912 में राजस्थानी भाषा का स्वतंत्र भाषा के रूप में वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करने वाले प्रथम व्यक्ति थे ।
- सजॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने राजस्थानी भाषा को 5 बोलियों में वर्गीकृत किया है जैसे-
- पश्चिमी राजस्थानी बोली (मारवाड़ी)
- उत्तरी-पूर्वी राजस्थानी बोली
- मध्यपूर्वी राजस्थानी बोली
- दक्षिण-पूर्वी राजस्थानी बोली
- दक्षिणी राजस्थानी बोली

(1) पश्चिमी राजस्थानी बोली (मारवाड़ी)-

- यह मुख्यतः मारवाड़, मेवाड़, पूर्वी सिंध, जैसलमेर, बीकानेर, दक्षिणी पंजाब और जयपुर के उत्तरी - पश्चिमी क्षेत्रों में बोली जाती है ।
- मारवाड़ी राजस्थान में सबसे अधिक क्षेत्र में बोली जाती है।
- पश्चिमी राजस्थानी या मारवाड़ी को निम्नलिखित चार भागों में विभाजित किया गया है

(A) पूर्वी मारवाड़ी

- राजिया के सोरठे इसी बोली में लिखे गये है।

(B) उत्तरी मारवाड़ी

- इसके अंतर्गत बीकानेर, बागड़ी, शेखावाटी बोलियों का समावेश किया जाता हैं ।
- वेलि क्रिसन रुक्मिणी री की रचना उत्तरी मारवाड़ी में की गई है ।

(C) पश्चिमी मारवाड़ी

- इसके अंतर्गत थली और ढटकी आदि बोलियों का समावेश किया जाता है ।

(D) दक्षिणी मारवाड़ी

- इसके अंतर्गत खेराड़ी, गौड़वाड़ी, सिरोही, गुजराती, देवड़ावाड़ी आदि बोलियों का समावेश किया जाता है।

(2) उत्तरी-पूर्वी राजस्थानी बोली

- इसमें मेवाती एवं अहीरवाटी को शामिल किया गया है।

(3) मध्यपूर्वी राजस्थानी बोली

- मध्यपूर्वी राजस्थानी बोली में ढूंढाड़ी व हाड़ौती बोली शामिल है।

(4) दक्षिणी-पूर्वी राजस्थानी बोली

- दक्षिणी-पूर्वी राजस्थानी बोली में मालवी व रांगड़ी बोली शामिल है ।

(5) दक्षिणी राजस्थानी बोली

- दक्षिणी राजस्थानी बोली में नीमाड़ी व भीली बोली शामिल है।
- **डॉ. एलपी टेस्सीटोरी का वर्गीकरण**
- एल. पी. टेस्सीटोरी इटली के निवासी थे ।
- एल.पी. टेस्सीटोरी की कार्य स्थली बीकानेर रही है।
- इनकी मृत्यु सन् 1919 में राजस्थान के बीकानेर जिलें में हुई थी।
- इनकी कब्र बीकानेर में ही है।
- बीकानेर के महाराजा गंगासिंह ने डॉ. एल पी टेस्सीटोरी को चारण साहित्य के सर्वेक्षण एवं सर्वे का कार्य सौंपा था ।
- डॉ. एल पी टेस्सीटोरी ने निम्न ग्रंथ लिखे है।
- राजस्थानी चारण साहित्य एवं ऐतिहासिक सर्वे
- पश्चिमी राजस्थानी व्याकरण
- डॉ. एल. पी. टेस्सीटौरी ने मालवा व राजस्थान की भाषाओं को दो भागों में विभाजित किया है-

(1) पश्चिमी राजस्थानी बोली या मारवाड़ी बोली
(2) पूर्वी राजस्थानी बोली या ढूंढाड़ी बोली

(1) पश्चिमी राजस्थानी बोली या मारवाड़ी बोली -

- पश्चिमी राजस्थानी भाषा का साहित्यिक रूप डिंगल है ।
- पश्चिमी राजस्थानी भाषा का उद्भव गुर्जर अपभ्रंश से हुआ।

- पश्चिमी राजस्थानी भाषा पर सर्वाधिक प्रभाव गुजराती भाषा का रहा है।
- इसकी प्रमुख बोलियाँ- बीकानेरी, बागड़ी, खैराड़ी, थली, ढ़टकी, मेवाड़ी, शेखावाटी है ।

(2) पूर्वी राजस्थानी बोली या ढूंढाड़ी बोली

- पूर्वी राजस्थानी भाषा का साहित्यिक रूप पिंगल है ।
- पूर्वी राजस्थानी भाषा का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।
- पूर्वी राजस्थानी भाषा पर सर्वाधिक प्रभाव ब्रज भाषा का रहा है ।
- पूर्वी राजस्थानी की प्रमुख बोलियाँ खड़ी जयपुरी, अहीरवाटी, तोरावाटी, मेवाती, रागड़ी, मालवी, काठेड़ी, राजावाटी, अजमेरी, हाड़ौती, किशनगढ़ी, चौरासी, नागरचोल है।

पश्चिमी राजस्थान की प्रमुख बोलियां

मारवाड़ी बोली

- मारवाड़ी बोली का प्राचीन नाम मरुभाषा है ।
- इसके साहित्यिक रूप को डिंगल कहते हैं।
- इसकी उत्पत्ति गुर्जर अपभ्रंश से हुआ है ।
- मारवाड़ी बोली का उत्पत्ति काल 8वीं सदी है।
- इस पर सर्वाधिक प्रभाव गुजराती भाषा का रहा है।
- इसे राजस्थान की प्राचीनतम बोली मानी जाती है।
- मारवाड़ी बोली राजस्थान में सर्वाधिक क्षेत्रों में बोले जाने वाली बोली है ।
- जैन साहित्य एवं मीरा की अधिकांश पद इसी भाषा में लिखे गए है ।
- राजिये रा सोरठा, वेलि किसन रुकमणी री, ढोला-मारवण, मूमल आदि लोकप्रिय काव्य मारवाड़ी भाषा में ही रचित हैं।
- विशुद्ध मारवाड़ी (पुरी शुद्ध मारवाड़ी) जोधपुर के आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती है।
- वर्ष 2009 में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने मारवाड़ी भाषा को व्हाइट हाउस की कार्यकारी भाषा बनाया था।

मारवाड़ी की उपबोलियां- 1. गौड़वाड़ी 2. देवड़ावाटी 3. थली 4. शेखावटी 5. धावडी 6. मेवाड़ी 7. बागड़ी 8. ढटकी 9. नागौरी 10. खेराड़ी

गौड़वाड़ी

- गौड़वाड़ी बोली राजस्थान में पाली (बाली तहसील) एवं जालौर (आहौर तहसील) जिले के उत्तरी भाग में बोली जाती है।
- बीसलदेव रासौ इस बोली की मुख्य रचना है।

देवड़ावाटी

- देवड़ावाटी बोली राजस्थान में सिरोही जिले में बोली जाती हैं ।

थली

- थली बोली राजस्थान में बीकानेर, चुरु, बाड़मेर व जैसलमेर जिलों में बोली जाती है ।
- इसमें सिन्धी भाषा के शब्दों का मिश्रण देखने को मिलता है ।

शेखावाटी - शेखावाटी बोली राजस्थान में झुंझुनू, सीकर तथा चूरू जिलों में बोली जाती है।

मेवाड़ी - मेवाड़ी बोली राजस्थान में भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, राजसमंद उदयपुर एवं उदयपुर के आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती है।

- मेवाड़ी, मारवाड़ी के बाद दूसरी महत्वपूर्ण बोली है।
- महाराणा कुंभा द्वारा रचित नाटकों में मेवाड़ी बोली का ही प्रयोग हुआ है।
- मेवाड़ी भाषा के विकसित रूप 12वीं - 13वीं शताब्दी में देखने को मिलते हैं।
- इसे ही धावडी बोली कहते है ।

वागड़ी

- वागड़ी बोली राजस्थान में डूंगरपुर व बांसवाड़ा व दक्षिणी-पश्चिमी उदयपुर के पहाड़ी भाग में बोली जाती है ।
- गुजरात के समीप होने के कारण वागड़ी बोली पर गुजराती भाषा का प्रभाव अधिक है।
- डॉ. जी. ए. ग्रियसन ने इसे **भीली बोली** कहा है ।

ढटकी

- यह जोधपुर, जैसलमेर व बीकानेर में बोली जाती है ।

पूर्वी राजस्थान की प्रमुख बोलियां

ढूंढाड़ी

- ढूंढाड़ी, पूर्वी राजस्थान की बोली है।
- यह राजस्थान के जयपुर, किशनगढ़ (अजमेर), टोंक तथा लावा (टोंक) तथा अजमेर मेरवाड़ा के पूर्वी अंचलों में बोली जाती है।
- ढूंढाड़ी में गद्य एवं पद्य दोनों में प्रचूर साहित्य रचा गया है।
- संत दादू दयाल एवं उनके शिष्यों ने ढूंढाड़ी भाषा में रचना की ।
- ढूंढाड़ी बोली को जयपुरी बोली तथा झाड़शाही भी कहते है।
- इसका बोली के लिए प्राचीनतम उल्लेख 18 वीं शताब्दी की 'आठ देस गुजरी' पुस्तक में हुआ है ।
- ढूंढाड़ी बोली की उपबोलियां- 1. हाड़ौती 2. किशनगढ़ी 3. तोरावाटी 4. राजावाटी 5. नागरचोल 6. अजमेरी 7. काठेती

हाड़ौती

- हाड़ा राजपूतों द्वारा हाड़ौती राजस्थान के कारण कोटा, बांरा, बूंदी तथा झालावाड़ का क्षेत्र हाड़ौती कहलाया और यहाँ की बोली हाड़ौती, जो ढूंढाड़ी की ही एक उपबोली है।
- हाड़ौती का भाषा के रूप में सर्वप्रथम प्रयोग केलॉग की हिन्दी व्याकरण में 1875 ई. में हुआ ।
- सूर्यमल्ल मिश्रण की रचना यें हाड़ौती बोली में ही है।
- वर्तनी की दृष्टि से हाड़ौती बोली राजस्थान की सभी बोलियों में सबसे कठिन समझी जाती है।

अध्याय – 5

राजस्थान के प्रमुख दर्शनीय स्थल

❖ **किले और स्मारक (छतरियाँ)**

राजस्थान के प्रमुख किले (दुर्ग)

- राजस्थान का सबसे पुराना दुर्ग – भटनेर (हनुमानगढ़)
- राजस्थान का सबसे नवीन दुर्ग - मोहनगढ़ (जैसलमेर)
- वर्ष 2013 में यूनस्को की विश्व धरोहर सूची में राजस्थान के 6 दुर्ग शामिल किये - 1. चित्तौड़ 2. कुम्भलगढ़ (राजसमंद) 3. गागरोन (झालावाड़) 4. जैसलमेर 5. रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर) 6. आमेर

➢ **चित्तौड़गढ़ का किला**

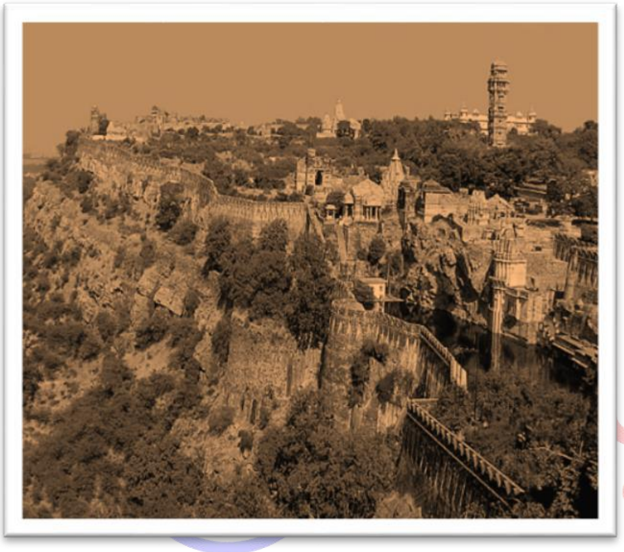

- **उपनाम-** चित्रकूट, राजस्थान का गौरव, दक्षिणी - पूर्वी द्वार, दुर्गों का दुर्ग, दुर्गों का सिरमौर, दुर्गों का तीर्थस्थल
- चित्तौड़गढ़ दुर्ग को चित्रकूट दुर्ग, खिज्राबाद, सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट, वॉटर फोर्ट आदि नामों से जाना जाता है।
- यह राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट 'गिरी दुर्ग' है।
- इसका निर्माण 8 वीं शताब्दी में 620m. ऊँचे मेसा के पठार पर गंभीरी एवं बेड़च नदी के मुहाने पर करवाया था।
- 2013 में UNESCO ने इसे विश्वधरोहर घोषित किया, तथा दिसम्बर 2018 में इस दुर्ग पर 12 रु. का डाक टिकट जारी किया गया था ।
- इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)।
- इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)।
- राणा कुम्भा को इस दुर्ग का आधुनिक निर्माता माना जाता है।
- यह दुर्ग दिल्ली मालवा व गुजरात के रास्ते पर स्थित है जिसका सामरिक महत्त्व सर्वाधिक है।
- 734 ई. में बप्पा रावल ने मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया।
- 1559 ई. में उदयपुर की स्थापना तक चित्तौड़ मेवाड़ की राजधानी रहा है।
- अबुल फजल ने इस दुर्ग के बारे में कहा है " गढ़ तो चित्तौड़गढ़ बाकी सब गढैया। "
- इस दुर्ग को राजस्थान का दक्षिणी प्रवेश द्वार व मालवा का प्रदेश द्वारा कहते हैं।
- यह दुर्ग धान्वन दुर्ग को छोड़कर सभी श्रेणी में शामिल है।
- यह एकमात्र दुर्ग है जिसमें कृषि होती थी।
- यह दुर्ग गम्भीरी व बेड़च नदी के संगम पर स्थित राजस्थान का क्षेत्रफल में सबसे बड़ा दुर्ग है।
- यह राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय किला है।
- यह दुर्ग मेसा पठार पर स्थित है जिसकी आकृत्ति व्हेल मछली के समान है।
- इस दुर्ग में प्रतिवर्ष चैत्र कृष्ण एकादशी को जौहर मेले का आयोजन किया जाता है।
- इस दुर्ग में स्थित प्रमुख जल स्रोतों में घी - तेल बावड़ी,कातण बावड़ी, जयमल - फत्ता तालाब, गौमुख कुण्ड, हाथीकुण्ड, सूर्यकुण्ड, भीमतल कुण्ड,रामकुंड व चित्रांगद मौरी तालाब प्रमुख है।

इस दुर्ग में राजस्थान में सर्वाधिक 3 साके हुए जो निम्न है-

- **प्रथम साका** वर्ष 1303 ई. में हुआ जब रत्नसिंह व अलाउद्दीन के मध्य युद्ध हुआ जिसमें रत्नसिंह ने केसरिया तथा उसकी रानी ने पद्मिनी ने जौहर किया।
- **द्वितीय साका** वर्ष 1534-35 ई. में हुआ जब विक्रमादित्य के सेनापति बाघसिंह रावत व गुजरात के शासक बहादुरशाह के मध्य युद्ध हुआ जिसमें सेनापति बाघसिंह रावत के नेतृत्व में केसरिया तथा राणा सांगा की रानी कर्मावती के नेतृत्व में जौहर हुआ।
- **तृतीय साका** वर्ष 1567-68 ई. में हुआ जब दिल्ली के बादशाह अकबर व राणा उदयसिंह के सेनापति जयमल राठौड़ व फत्ता सिसोदिया के मध्य युद्ध हुआ जिसमें सेनापति जयमल – फत्ता के नेतृत्व में केसरिया तथा गुलाब कंवर व फूल कंवर के नेतृत्व में जौहर हुआ।

इस दुर्ग में सात प्रवेश द्वार हैं।

➢ **विजय स्तम्भ**

- यह चित्तौड़ दुर्ग में स्थित इमारत है।
- ऊँचाई-122 फीट
- चौड़ाई 30 फुट है
- 9 मंजिला जिसका
- निर्माण 1440-48 ई.
- इसमें 157 सीढ़ियाँ
- निर्माण में 90 लाख का खर्चा
- शिल्पी जैता,नाथा, पामा, पूंजा
- तीसरी मंजिल पर 9 बार अरबी भाषा में अल्लाह लिखा
- इसकी 8वीं मंजिल पर कोई मूर्ति नहीं

➢ **विजय स्तम्भ के उपनाम**

- **विक्ट्री टावर,**
- **रोम के टार्जन के समान -फर्ग्युसन**
- **कुतुबमीनार से श्रेष्ठ - कर्नल जेम्स टॉड**
- **हिन्दू प्रतिमा शास्त्र की अनुपम निधि - आर. पी. व्यास**
- **संगीत की भव्य चित्रशाला – डॉ. सीमा राठौड़**
- **लोकजीवन का रंगमंच - गोपीनाथ शर्मा**
- **विष्णु ध्वज - उपेन्द्रनाथ डे कीर्ति**
- इसका निर्माण राणा कुम्भा ने सारंगपुर विजय (1437 ई.) के उपलक्ष में करवाया।
- इसके चारों ओर मूर्तियाँ होने के कारण इसे मूर्तियों का अजायबघर कहते हैं।
- यह राजस्थान की प्रथम इमारत है जिस पर 15 अगस्त, 1949 को एक रुपये का डाक टिकट जारी किया गया।
- यह राजस्थान पुलिस व माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का प्रतीक चिह्न है। विनायक दामोदर सावरकर द्वारा स्थापित वर्ष 1904 ई. 'अभिनव भारत' का प्रतीक चिह्न भी विजय स्तम्भ ही था।
- इसकी 9 वीं मंजिल पर अत्रि - महेश ने मेवाड़ी भाषा में कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति की रचना की। जिसमें राणा कुम्भा की विजयों का वर्णन है।

➢ **कीर्ति स्तम्भ**

- इसका निर्माण 11-12वीं सदी में जैन व्यापारी जीजा ने करवाया।
- इसकी ऊँचाई 75 फीट तथा 7 मंजिला है।
- यह इमारत जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ / ऋषभदेव को समर्पित है।
- कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति की शुरुआत अत्रि ने की तथा समाप्त उसके पुत्र महेश भट्ट ने की।

➢ **गागरोण का किला**

- वर्तमान झालावाड़ जिले में काली सिंध एवं आहू नदियों के किनारे मुकन्दरा पहाड़ी पर सामेल नामक स्थान पर स्थित है।
- गागरोण का किला एक जलदुर्ग है।
- इसका निर्माण 12वीं सदी में डोड राजा विजलदेव परमार ने करवाया।
- इसे ' डोडगढ़ ' एवं 'धूलरगढ़' भी कहते हैं
- देवेन सिंह खिंची ने वीजलदेव को हराकर इस पर अधिकार कर लिया था।
- यह दुर्ग बिना नींव के है।
- यहाँ सन्त पीपा की जन्मस्थली व छतरी है।
- यहाँ मीठेशाह की दरगाह (औरंगजेब ने निर्माण), दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, जनाना महल, अचलदास का महल, रंग महल व औरंगजेब द्वारा निर्मित बुलन्द दरवाजा स्थित है ।
- प्रवेश द्वार- सूरजपोल , भैरवपोल , गणेशपोल
- यहाँ की टकसाल में सालिमशाही रुपया बनता था।
- गागरोन दुर्ग को उदक दुर्ग, मुस्तफाबाद, गर्गराटपुर के नाम जाना जाता है।
- इसमें दो साके हुये है। [1423 व 1444], दो जौहर हुए।
- इसमें 92 मंदिर बने हुए हैं।
- 2013 में UNESCO ने इसे विश्व धरोहर घोषित किया तथा दिसम्बर 2018 में इस दुर्ग पर 5 रु. का डाक टिकट जारी किया गया।
- इस किले में एक जौहर कुण्ड है, अंधेरी बावड़ी, गीध कढ़ाई (यहाँ राजनैतिक ऊँची पहाड़ी पर बंदियों को सजा दी जाती थी) है।
- गागरोण का किला बिना नींव के (चट्टानों पर) खड़ा है।

➢ **कुम्भलगढ़ का किला**

- इस दुर्ग का प्रारम्भिक निर्माण अशोक मौर्य के पुत्र सम्प्रति मौर्य ने जरगा पहाड़ियों में मच्छेद्रपुर के नाम से करवाया।
- नागौर विजय के उपलक्ष में इसका निर्माण 1448-58 ई. राणा कुम्भा ने अपनी प्रिय रानी कुम्भलदेवी के सम्मान में करवाया।
- कुम्भलगढ़ का वास्तुकार 'मण्डन' था।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़-मारवाड़ का सीमा प्रहरी, कुम्भलमेरु, मेवाड़ का मेरुदण्ड, मेवाड़ की संकटकालीन आश्रयस्थली, मेवाड़ की आँख भी कहते हैं ।

- अत्यधिक ऊँचाई पर बना हुआ होने के करण अबुल फजल ने कहा था कि इस किले को नीचे से ऊपर की ओर देखने पर पगड़ी गिर जाती है।
- इस दुर्ग के चारों ओर दीवार है जिसकी लम्बाई लगभग 36 किलोमीटर तथा चौड़ाई 7 मीटर है। जिस कारण से इसे भारत की महान दीवार कहते हैं।
- कर्नल जेम्स टॉड ने इसे एट्रास्कॉन की संज्ञा दी।
- पन्नाधाय ने उदयसिंह को कुम्भलगढ़ में आशादेव पुरा की सुरक्षा में भेजा।
- इस दुर्ग में राणा उदय सिंह का राज तिलक तथा महाराणा प्रताप का जन्म बादल महल के जूनीकचरी में हुआ।
- इस दुर्ग में एक लघु दुर्ग है जिसे कटारगढ़ के नाम से जानते है जिसमें बादल महल स्थित है जो कुम्भा का निवास स्थान था।
- कटारगढ़ में स्थित मामादेव मंदिर के पास मामा देव कुण्ड में राणाकुम्भा की उसके पुत्र ऊदा ने हत्या कर दी।
- इस दुर्ग को केवल एक बार 1578 ई. में शाहबाज खां (अकबर का सेनापति) ने 3 बार आक्रमण कर इस दुर्ग को विजित किया।
- इस दुर्ग में 9 द्वार हैं जिसमें हल्ला पोल प्रथम प्रवेश द्वार है।
- इस दुर्ग में उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज की छत्तरी बनी हुई है (12 खम्भों की) इसका वास्तुकार घषनपना है।
- इस दुर्ग में तिलखाना स्थित है जो हाथियों का बाड़ा था।
- दुर्ग में स्थित झाली रानी के महल को झाली रानी का मालिया कहते हैं।
- इस दुर्ग में 1460 ई. में कुम्भलगढ़ प्रशस्ति मामादेव मंदिर में काली शिलाओं पर संस्कृत भाषा में लिखी गयी है। इस प्रशस्ति की रचना कान्हा व्यास ने की थी।
- कुंभलगढ़ दुर्ग को कुंभलमेरु, कुंभपुर, कमलमीर, मच्छेन्द्र, नामों से भी जाना जाता है।
- 2013 में UNESCO ने इसे विश्व धरोहर घोषित किया तथा दिसम्बर 2018 में इस दुर्ग पर 5 रु. का डाक टिकट जारी किया गया।

➢ **<u>रणथम्भौर दुर्ग</u>**

- वर्तमान में सवाई माधोपुर में स्थित है।
- इसका निर्माण 887 ई. में रणधामदेव चौहान ने करवाया। यह दुर्ग अण्डाकार आकृति में निर्मित है।
- यह रण व थंभन पहाड़ी पर स्थित होने के कारण रणथम्भौर कहलाया।
- इस दुर्ग में छह प्रवेश द्वार हैं मुख्य प्रवेश द्वार नौ लखा दरवाजा कहलाता है।
- इसे चित्तौड़गढ़ का छोटा भाई व दुर्गाधिराज भी कहते हैं।
- अबुल फजल ने इस दुर्ग के बारे में कहा बाकी सभी दुर्ग नंगे हैं यह बख्तरबंद है।
- इस दुर्ग पर दिल्ली सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी ने 1292 ई. में आक्रमण किया जब सफलता नहीं मिली तब उसने कहा कि ऐसे 10 दुर्गों को मैं मुसलमान के बाल के बराबर भी नहीं समझता।
- अलाउद्दीन खिलजी ने वर्ष 1299 ई. में असफल आक्रमण किया।
- 10 जुलाई, 1301 ई. में इस दुर्ग पर अलाउद्दीन खिलजी का अधिकार हुआ। इस आक्रमण में हम्मीर देव चौहान के नेतृत्व में केसरिया व उसकी रानी रंगदेवी के नेतृत्व में पद्मसर तालाब में जल जौहर हुआ।
- इस प्रकार यहाँ राजस्थान का प्रथम साका हुआ। इस विजय पर अमीर खुसरो का कथन " आज कुफ्र का घर इस्लाम का घर बन गया
- इस दुर्ग में हम्मीर महल, सुपारी महल , जौंरा - भौंरा (अनाज रखने के गोदाम) , हम्मीर कचहरी , रानी कर्मावती की अधूरी छतरी(अधूरे सपनों के महल) जोगी महल , पीर सदरुद्दीन की दरगाह , रानीहाड़ तालाब , लक्ष्मीनारायण मंदिर , गुप्त गंगा स्थित है।
- दुर्ग में स्थित शिव मंदिर में हम्मीर ने अपना सिर चढ़ाया था।
- हम्मीर देव चौहान ने अपने पिता जैत्रसिंह के 32 वर्ष के शासन काल की याद में 32 खम्भों की छतरी का निर्माण करवाया जिसे न्याय की छतरी कहते हैं।
- पद्मा तालाब , रणिहाल तालाब , रणत्या डूंगरी आदि स्थित हैं।
- इस दुर्ग में अर्रादा (एक उपकरण था जिससे दुश्मनों पर पत्थर फैंके जाते थे) व मगरनी (दुश्मनों पर ज्वलनशील पदार्थ फैंका जाता था) स्थित है।
- रणथम्भौर का किला हम्मीर हठ के लिए प्रसिद्ध है।
- इस किले में रणत भंवर (त्रिनेत्रगणेश जी का मंदिर शादी की पहली पत्रिका यहाँ भेजी जाती है)
- रणथम्भौर दुर्ग एक मात्र ऐसा दुर्ग है जिसमें मंदिर, मस्जिद व गिरिजाघर स्थित है।
- इसमें पीर सदरुद्दीन की दरगाह' स्थित है।

➢ **<u>मेहरानगढ़ दुर्ग</u>**

अध्याय – 11

लोक कलाएं

(हस्त कला / चित्रकला)

➢ पॉटरी

- चीनी मिट्टी के बर्तनों पर की जाने वाली आकर्षक चित्रकारी पॉटरी कहलाती है।
- पॉटरी का उद्भव दमिश्क (सीरिया की राजधानी) में माना जाता है जो फारस, अफगानिस्तान होती हुई भारत आयी।

➢ ब्लू पॉटरी

- चीनी - मिट्टी के बर्तनों पर नीले रंग से चित्रकारी करना।
- इसके लिए जयपुर प्रसिद्ध है।
- राजस्थान में इसे लाने का श्रेय मानसिंह को है।
- इस कला का सर्वाधिक विकास जयपुर शासक रामसिंह द्वितीय के समय हुआ था।
- इस कला को पुर्नजिवित करने का श्रेय कृपाल सिंह शेखावत को है जिनका जन्म स्थान सीकर जिला है।
- कृपाल सिंह शेखावत को 1974 में पद्म् श्री पुरस्कार दिया जा चुका है।
- ब्ल्यू पॉटरी की एकमात्र महिला कलाकार नाथी बाई है।

➢ **ब्लैक पॉटरी -** ब्लैक पॉटरी कोटा की प्रसिद्ध है।
➢ **कागजी पॉटरी -** कागजी पॉटरी अलवर की प्रसिद्ध है।
➢ **मोलेला पॉटरी -** मोलेला पॉटरी राजसमन्द की प्रसिद्ध है ।
➢ **बीकानेरी पॉटरी (सुनहरी पॉटरी -** इस पॉटरी में लाख का प्रयोग किया जाता है ।

➢ मूनव्वती / उस्ता कला

- इस कला में ऊँट की खाल पर सुनहरी नक्काशी की जाती है।
- यह कला बीकानेर की प्रसिद्ध है।
- हीसामुद्दीन उस्ता कला के प्रमुख चित्रकार हैं , जिन्हें इस कला के लिए वर्ष 1986 में पद्मश्री दिया गया था। मुहम्मद हनीफ उस्ता, कादर बक्श इसके कारीगर हैं ।
- उस्ताकला को बढ़ावा देने हेतु बीकानेर में कैमल हाईड ट्रेनिंग सेन्टर की स्थापना 15 अगस्त , 1975 को की गई थी जिसके प्रथम निदेशक हीसामुद्दीन उस्ता को बनाया गया था।
- इलाही बक्श ने ऊँट की खाल पर बीकानेर शासक महाराजा गंगासिंह का चित्र बनाया ।

➢ मथैरणा कला

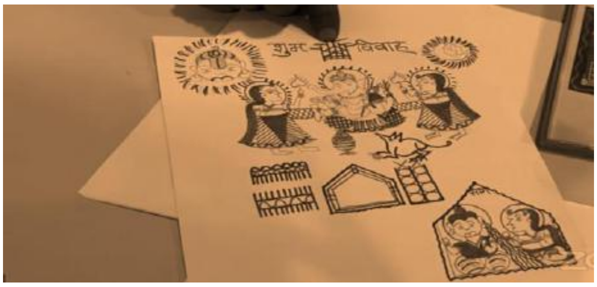

इस कला में कपड़े पर सुनहरी नक्काशी की जाती है। यह कला बीकानेर की प्रसिद्ध है। इस कला में ईसर , गणगौर, देवी - देवताओं की भीत्ति चित्र बनाये जाते हैं । मुन्नालाल, चन्दूलाल मथैरणा कला के प्रमुख कारीगर थे।

➢ मीनाकारी

- विभिन्न रंगों की मूल्यवान रत्नों पर मीनें की सहायता से तथा सोने - चाँदी के आभूषणों पर चित्रकारी या रंग भरने की कला को मीनाकारी कहते है।
- मीनाकारी कला का उद्भव पर्शिया (ईरान) में माना जाता है।
- लाल रंग बनाने में जयपुर के कलाकार कुशल है।
- मीनाकारी में फूल-पत्ती, मोर आदि का अंकन प्रायः किया जाता है।
- कोटा के रेतवाली क्षेत्र में कांच पर विभिन्न रंगों से मीनाकारी का काम किया जाता है।
- कागज जैसे पतले पत्थर पर मीनाकारी करने के लिए बीकानेर के मीनाकार प्रसिद्ध है।
- इसे चौसरों के समय फारस में लाया गया और फारस से मुगलों द्वारा लाहौर में लायी गई जहाँ पर सिक्खों द्वारा यह कार्य किया जाता है।
- लाहौर से महाराजा मानसिंह प्रथम द्वारा आमेर में लाया गया।

- जिसमें मुख्य मीनाकार हरिसिंह, अमरसिंह, किशनसिंह, गोभासिंह, श्यामसिंह थे।

➢ **राज्य में निम्न मीनाकारी प्रसिद्ध है-**

(i) चाँदी पर मीनाकारी- नाथद्वारा, राजसमंद
(ii) पीतल पर मीनाकार जयपुर
(iii) तांबे पर मीनाकारी- भीलवाड़ा
(iv) सोने पर मीनाकारी- प्रतापगढ़

- वर्तमान में जयपुर की मीनाकारी प्रसिद्ध है , जिसमें मुख्य रूप से कुदरतसिंह तथा मुन्ना लाल (गुरूचरण सिंह) विख्यात है।
- सरदार कुदरत सिंह को 1988 में इस काल के लिए पद्म श्री पुरस्कार प्राप्त हो चुका हैं।

➢ **थेवा कला**

- थेवा कला प्रतापगढ़ की प्रसिद्ध है।
- थेवा कला का नाम इनसाइक्लोपिडिया ऑफ ब्रिटेनिका में अंकित है।
- काँच पर सोने या चाँदी का सूक्ष्म चित्रांकन जिसमें रंगीन बेल्जियम काँच का प्रयोग किया जाता है । इस कला की शुरुआत लगभग 500 वर्ष पूर्व नाथूजी सोनी ने महाराजा सावंत सिंह के समय प्रतापगढ़ में की थी।
- इस कला के लिए प्रतापगढ़ का सोनी परिवार विख्यात है।
- इसे सोनी परिवार भारत का एकमात्र ऐसा परिवार है जिसे किसी हस्तकला के लिए एक ही परिवार के सर्वाधिक व्यक्तियों को राष्ट्रपति पुरस्कार दिया जा चुका है।
- थेवा कला के कारीगर पन्नीगर कहलाते है।

➢ **रत्नाभुषण**

- हीरे - जवाहारात-पन्ना का कार्य रत्नाभुषण कहलाता है।
- विश्व की सबसे बड़ी मण्डी जयपुर है।

➢ **कोफ्तगिरी**

- राजस्थान में इसके प्रमुख केन्द्र जयपुर व अलवर है।
- कोफ्तगिरी का कार्य दमिश्क से पंजाब लाया गया और पंजाब से गुजरात तथा गुजरात से राजस्थान लाया गया।
- फौलाद की बनी वस्तुओं पर यह काम सोने के पतले तारों की जड़ाई द्वारा किया जाता है।
- कोफ्तगिरी शिल्प का इस्तेमाल ढाल, तलवारों व खंडर और अन्य उपयोगी सामग्री जैसे डिब्बे, बक्से, भोजन काटने और खाने के कटलरी सामान शिकार चाकू, छुरी इत्यादि के निर्माण में किया जाता है
- इसके कलाकार को कोफ्तगर कहा जाता है ।

➢ **पिछवाई कला**

- कपड़े पर चित्रित उस चित्र शैली का नाम है जिसे मन्दिरों में ' मूर्ति के पीछे ' की दीवार को ढ़कने और सुन्दर दिखाने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।
- राजस्थान में पिछवाई कला का विकास 1700 ई. के आस - पास माना जाता है।
- पिछवाई बनाने वाले कलाकारों में लच्छीराम का नाम सर्वाधिक प्रचलित है।
- पिछवाई कला को जीवन्त जाग्रत रखने वाले कलाकारों में घनश्याम निम्बाई और कैलाश शर्मा का नाम लिया जाता है।
- पिछवाई कला का उल्लेख रॉबर्ट स्केलटन की पुस्तक 'राजस्थानी टेम्पल हैंगिग्स ऑफ दि कृष्ण कल्ट' में हुआ ।
- पिछवाई कला केन्द्रों में नाथद्वारा, कांकरोली, कोटा, अलवर है।

➢ **बादला**

- जस्ते से निर्मित पानी की बोतल जिसके चारों तरफ रंगीन कपड़ा लगा हुआ होता है उसे बादला कहते हैं।
- यह जोधपुर के प्रसिद्ध हैं।

➢ **पाने**

- सूक्ष्म कागज पर देवी - देवताओं के चित्र पाने कहलाते हैं।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- राजस्थान में श्रीनाथ जी के पाने का सबसे सुंदर माने जाते हैं।

कुंदन कला

- सोने एवं चांदी के आभूषणों पर कीमती पत्थरों की जड़ाई कुंदन कला कहलाती है।
- कुंदन कला जयपुर की प्रसिद्ध है।

मुरादावादी

- पीतल के बर्तनों पर खुदाई करके की गई कलाकृतियां मुरादावादी कहलाती है।
- मुरादावादी जयपुर की प्रसिद्ध है ।

बंधेज

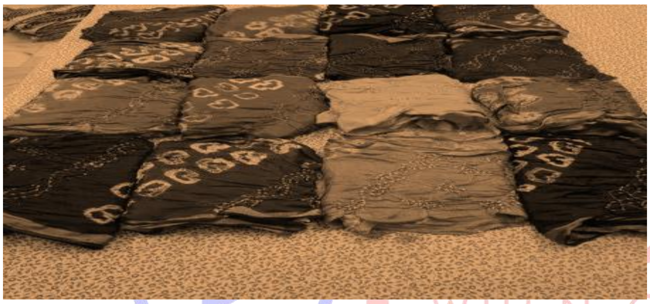

- एक प्रकार की तकनीक है, जिसमें कपड़े को बांध कर रंग चढ़ाया जाता है। बंधेज के लिए जयपुर, जोधपुर व शेखावाटी प्रसिद्ध हैं।
- बंधेज के लिए जोधपुर के तैयब खां को पद्म श्री अवार्ड दिया गया।
- बंधेज का सर्वप्रथम उल्लेख हर्ष चरित में मिलता है जिसकी रचना बाणभट्ट ने की थी।
- बंधेज की सबसे बड़ी मण्डी जोधपुर है, परंतु काम सुजानगढ़ में ही अधिक होता है । यहाँ के मुबारकजी तथा खाजूजी छीपा का नाम बंधेज में अग्रणी रहा है ।
- बंधेज का काम मूल रूप से चढ़वा जाति के मुसलमानों द्वारा किया जाता है।
- बंधेज के कार्य को टाई एंड डाइ की कला भी कहा जाता है।
- इसका प्रारंभ सीकर से हुआ।
- बंधेज के कार्य के लिए जो सर्वप्रथम कपडे पर जो अलंकरण बनाया जाता है उसे टीपना कहते है
- बंधेज की चुनरी व साडी जोधपुर की प्रसिद्ध है।
- लहरिया जयपुर के प्रसिद्ध है।
- मोठडे जोधपुर के प्रसिद्ध है।
- पाटोदा (सीकर) का लुगड़ा प्रसिद्ध है।
- पोमचा जयपुर का प्रसिद्ध है, यह जच्चा स्त्रियों को पहनाया जाता है ।
- पीला पोमचा शेखावटी का प्रसिद्ध है।
- बंधेज की सबसे बडी मंडी जोधपुर में है ।
- बंधेज कला द्वारा पाँच रंगों से रंगा गया साफा **बावरा** कहलाता है।
- जोधपुर की चुनरी बंधेज प्रसिद्ध है। जोधपुर की बंधेज की साड़ियाँ का काम पूरे भारत में प्रसिद्ध है। यह कला मुल्तान से मारवाड़ में आयी।
- केवल एक रंग से तैयार साफा, जिसमें सफेद बूंदे होती है, **राजशाही** कहलाता है ।
- बंधेज लहरिया- कपड़े को एक सिरे से दूसरे सिरे तक बांधने से धारियाँ बन जाती है। यह बंधेज **लहरिया** कहलाता है।
- लहरिया फोहनीदार , जालदार , खत , पचलड़ी , पाटली , और नगीना प्रकार का होता है।
- यदि लहरिया की धारियां एक - दूसरे को काटती है तो **उसे मोठड़ा** कहते है।
- बड़ी - बड़ी चौंकोर बूंदो से युक्त अलंकरण **धनक** कहलाती है।
- बूँदों की आकृति गोलाकार हो, चुनरी कहलाती है। चुनरी सुआ , बेल , त्रिबूदी , सग पीला , मोठड़ा , डाबा , लाडू , पतंगा , चौंखाना तथा धनक आदि प्रकार की होती है।
- शेखावाटी- यहाँ बूंदों के माध्यम से बेल - बूटे , पशु - पक्षियों के अलंकरण भी बनाते है । इसका सीकर प्रमुख केन्द्र है।
- पाटोदा का लूगड़ा- झुंझुनूं जिले के मुकुन्दगढ़ और लक्ष्मणगढ़ का पाटोदा का लूगड़ा प्रसिद्ध है। यह पीले पोमचे का का ही एक प्रकार है।
- बाड़मेर और जैसलमेर मे घाघरें की फड़दें रंगी जाती है।
- बारां , कोटा एवं बूंदी अपनी बारीक बंधेज के लिए प्रसिद्ध रहे है।
- बूंदी का शिकारगाह अलंकरण (पेटर्न) प्रसिद्ध था। सवाई माधोपुर की बंधेज की पहचान मोर और इमली का अलंकरण हैं ।

रंगाई - छपाई

- कपड़े पर रंग चढ़ाना व विभिन्न आकृतियों तथा अलंकरणों का प्रयोग करना रंगाई - छपाई कहलाता है।
- रंगाई , छपाई का काम नीलगर , छिपें व रंगरेजों द्वारा किया जाता है।
- कपड़े की रंगाई की कला जीनगीरी कला कहलाती है ।

आजम प्रिंट

राजस्थान विविध

राजस्थान में प्रथम

प्रथम पुलिस महानिदेशक	रघुनाथ सिंह कपूर (1983 से)
प्रथम राजप्रमुख	सवाई मानसिंह (जयपुर)
प्रथम राज्यपाल	सरदार गुरुमुख निहाल सिंह
प्रथम मुख्यमंत्री	पण्डित हीरा लाल शास्त्री
प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री	टीकाराम पालीवाल
प्रथम विधानसभा अध्यक्ष	नर्रोत्तम लाल जोशी
प्रथम विधानसभा उपाध्यक्ष	लाल सिंह शक्तावत
प्रथम राज्यपाल में मनोनीत होने वाले राजस्थानी	नारायण सिंह माणकलाव
प्रथम मुख्य न्यायधीश	कमलकांत वर्मा
प्रथम राज्य मानवाधिकार आयोग के अधक्ष	कांता भटनागर
प्रथम राज्य लोकसेवा आयोग अध्यक्ष	एस. के. घोष
प्रथम मुख्य सचिव	के. राधाकृष्णन
प्रथम राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष	कृष्ण कुमार गोयल
प्रथम पुलिस महानिरीक्षक	आर. बनर्जी (1949 से)
प्रथम महाराज प्रमुख	महाराणा भूपालसिंह (उदयपुर)
प्रथम सुचना आयुक्त	एम. डी कोरानी
प्रथम महिला राज्यपाल	प्रतिभा पाटिल
प्रथम महिला मुख्यमंत्री	वसुंधरा राजे सिंधिया
प्रथम महिला विधानसभा अध्यक्ष	सुमित्रा सिंह
प्रथम महिला विधानसभा उपाध्यक्ष	तारा भंडारी
प्रथम महिला उपमुख्मंत्री	कमला बेनीवाल
प्रथम महिला मंत्री	कमला बेनीवाल
प्रथम महिला विधायक	यशोदा देवी (बांसवाडा)
प्रथम महिला सांसद	महारानी गायत्री देवी (जयपुर)
प्रथम महिला पायलेट	नम्रता भट्ट
प्रथम महिला फ्लाइंग ऑफिसर	निवेदित्ता
प्रथम महिला मुख्य सचिव	श्रीमती कुशाल सिंह
प्रथम पद्म विभूषण	श्रीमती जानकी देवी बजाज (1956)
प्रथम महिला डॉक्टर	डॉ. पार्वती गहलोत (जोधपुर)
प्रथम पद्म श्री	श्रीमती रत्ना शास्त्री
प्रथम महिला मेग्सेसे पुरुस्कार	अरुणा राय (2000)
प्रथम पद्म् विभूषण	कंवर सेन (1956)
प्रथम राजीव गाँधी खेल रत्न पुरुस्कार	राज्यवर्धन सिंह राठोड (2004-2005)
प्रथम परमवीर चक्र	हवालदार मेजर पीरु सिंह (1948)
प्रथम अशोक चक्र	हवालदार शम्भूदयाल सिंह (1961)
प्रथम महावीर चक्र	कर्नल किशन सिंह राठोड (1948)
प्रथम ग्रेमी अवार्ड	पण्डित विश्व मोहन भट्ट (1994)
प्रथम मेग्सेसे पुरुस्कार	डॉ. प्रमोद करण सेट्ठी (1981)
प्रथम राजस्थान खेल रत्न पुरुस्कार	लिम्बाराम (1995)
प्रथम अर्जुन पुरुस्कार	डॉ. करणी सिंह (निशानेबाजी, 1961), प्रेम सिंह (पोलो 1961), सलीम दुरानी (क्रिकेट 1961)
प्रथम अर्जुन पुरुस्कार	डॉ. करणी सिंह (निशानेबाजी, 1961), प्रेम सिंह (पोलो 1961), सलीम दुरानी (क्रिकेट 1961)
प्रथम राजस्थानी अभिनेता	महिपाल (नजराना)
प्रथम राजस्थानी अभिनेत्री	सुनेना (नजराना)
प्रथम निर्माता निर्देशक व संगीतकार	जी.पी. कपूर

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान में बड़ा, ऊँचा, लम्बा, छोटा, सर्वाधिक व न्यूनतम

नोट :- जनगणना से सम्बंधित दिए गए आंकड़े 2011 के अनुसार हैं।

सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला जिला	जैसलमेर 38,401 वर्ग किलोमीटर
न्यूनतम क्षेत्रफल वाला जिला	धौलपुर 3032 वर्ग किलोमीटर
सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला	जयपुर
न्यूनतम जनसंख्या वाला नगर	जैसलमेर
सर्वाधिक जनसंख्या वाला नगर	जयपुर
सबसे छोटा नगर	बोरखेडा (बांसवाडा)
सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाला जिला	जयपुर 595 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर
न्यूनतम जनसंख्या घनत्व वाला जिला	जैसलमेर 17 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर
सर्वाधिक लिंगानुपात वाला जिला	डूंगरपुर 994
न्यूनतम लिंगानुपात वाला जिला	धौलपुर 846
सर्वाधिक वृद्धि दर वाला जिला	बाडमेर 32.5 प्रतिशत
न्यूनतम वृद्धि दर वाला जिला	श्री गंगानगर 10 प्रतिशत
सर्वाधिक साक्षरता प्रतिशत वाला जिला	कोटा 76.6 प्रतिशत
सम्पूर्ण साक्षरता गाँव	मसुदा (ब्यावर)
न्यूनतम साक्षरता प्रतिशत वाला जिला	जालोर 54.9 प्रतिशत
सर्वाधिक पुरुष साक्षरता वाला जिला	झुंझुनूं 86.9 प्रतिशत
न्यूनतम पुरुष साक्षरता वाला जिला	प्रतापगढ़ 69.5 प्रतिशत
सर्वाधिक महिला साक्षरता वाला जिला	कोटा 65.9 प्रतिशत
न्यूनतम महिला साक्षरता वाला जिला	जालोर 38.5 प्रतिशत
सर्वाधिक अनुसूचित जाति की जनसंख्या वाला जिला	जयपुर
न्यूनतम अनुसूचित जाति की जनसंख्या वाला जिला	डूंगरपुर
सर्वाधिक अ. जा. की जनसंख्या वाला जिला	श्रीगंगानगर 36.58 प्रतिशत
न्यूनतम अ.जा. की जनसंख्या प्रतिशत वाला जिला	डूंगरपुर 4.2 प्रतिशत
सर्वाधिक अ.ज.जा. की जनसंख्या वाला जिला	उदयपुर
न्यूनतम अ.ज.जा. की जनसंख्या वाला जिला	बीकानेर
सर्वाधिक अ.ज.जा. की जनसंख्या प्रतिशत वाला जिला	बांसवाडा 76.38 प्रतिशत
न्यूनतम अ.ज.जा. की जनसंख्या प्रतिशत वाला जिला	नागौर 0.2 प्रतिशत
सर्वोच्च पर्वतशिखर	गुरुशिखर 1722/1727 मीटर
न्यूनतम पशु सम्पदा वाला जिला	धौलपुर
सर्वाधिक विधानसभा सीटों वाला जिला	जयपुर (13)
न्यूनतम विधानसभा सीटों वाला जिला	जैसलमेर (3)
सबसे बड़ी दुग्ध डेयरी	रानीवाडा (सांचौर)
सर्वाधिक वन क्षेत्र वाला जिला	उदयपुर (36.62) प्रतिशत
न्यूनतम वन क्षेत्र वाला जिला	चूरू (0.42) प्रतिशत
सर्वाधिक पशु सम्पदा वाला जिला	बाडमेर
सबसे प्राचीन पर्वतश्रृंखला	अरावली 692 किलोमीटर
सर्वाधिक लम्बा राजमार्ग	NH 15 – 874 किलोमीटर
सबसे छोटा राष्ट्रीय राजमार्ग	NH 71 B-5 किलोमीटर
सबसे बड़ा पशुमेला (आय की से दृष्टि)	वीर तेजाजी पशुमेला परबतसर (डीडवाना-कुचामन)
सर्वाधिक शुष्क स्थान	फलौदी
सर्वाधिक ठण्डा जिला	चूरू
सर्वाधिक गर्म जिला	चूरू
सबसे लम्बी नदी	चम्बल 966 किलोमीटर
सर्वाधिक आर्द्र स्थान	माउन्ट आबू

165. किस क्रम में 'अशन-अशनि' शब्द युग्म का सही अर्थ भेद हैं?
A. आहार – विहार
B. अभाव - स्वभाव
C. वस्त्र - उपहार
D. भोजन - बिजली
उत्तर :- D

166. 'तत्सम' शब्द में 'तत्' किस भाषा के लिए प्रयुक्त हुआ है?
A. वैदिक संस्कृत
B. पालि
C. संस्कृत
D. प्राकृत
उत्तर :- C

167. किस क्रमांक का शब्द तत्सम है?
A. घी
B. चाय
C. घोटक
D. नंगा
उत्तर :- C

168. इनमें से कौन-सा शब्द तत्सम है?
A. रुक्ष
B. सूरज
C. बिच्छु
D. सावन
उत्तर :- A

169. किस विकल्प में सभी शब्द तत्सम है ?
A. सच, ग्राम
B. मस्तक, श्वास
C. छिद्र, सौ
D. आधा, काम
उत्तर :- B

170. निम्न में से क्रिया से बनी भाववाचक संज्ञा नहीं है ?
A. भलाई
B. कमाई
C. लड़ाई
D. पढ़ाई
उत्तर :- A

171. किस विकल्प में सभी शब्द जातिवाचक संज्ञा हैं?
A. भारत, रामायण, मोहन
B. जयपुर, लड़की, बुढ़ापा
C. पुस्तक, पहाड़, नदी
D. गंगा, हिमालय, मनुष्य
उत्तर :- C

172. किस वाक्य में पुरुषवाचक सर्वनाम नहीं है ?
A. आप यहाँ बैठिए।
B. उसमें धैर्य की कमी है।
C. सामान कौन लाएगा?
D. हम स्कूल जा रहे हैं।
उत्तर :- C

173. 'यह' कौन-सा सर्वनाम है ?
A. निश्चयवाचक
B. पुरुषवाचक
C. निजवाचक
D. संबंध वाचक
उत्तर :- A

174. इनमें से किस वाक्य में परिमाणवाचक विशेषण है ?
A. रमन पाँच केले खा गया।
B. सोहन पाँच किलो दूध पी गया।
C. आज मैंने अधिक अंगूर खा लिए।
D. थोड़े बच्चे दिखाई दे रहे हैं।
उत्तर :- B

175. कौनसा शब्द संज्ञा से बना हुआ विशेषण है?
A. सुखी
B. प्रसन्न
C. कटु
D. सुन्दर
उत्तर :- A

176. सकर्मक क्रिया वाला वाक्य छाँटिए?
A. राजू सदा रोता रहता है।
B. हरीश बस पर चढ़ गया।
C. कैलाश छत से गिर पड़ा।
D. सतीश ने केले खरीदे।
उत्तर :- D

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

177. किस वाक्य में सकर्मक क्रिया नहीं है ?
A. मजदूर चाय पी रहे हैं।
B. पक्षी आकाश में उड़ रहे हैं।
C. बच्चे पतंग उड़ा रहे हैं।
D. किसान फसल काट रहा था।
उत्तर :- B

178. निम्नलिखित विकल्प में अकर्मक क्रिया है ?
A. पढ़ना
B. रोना
C. खरीदना
D. देखना
उत्तर :- B

179. किस वाक्य में सातत्यबोधक पक्ष का उदाहरण है ?
A. वह पढ़ाई कर रहा है।
B. राकेश पढ़ रहा है।
C. वह नियमित रूप से स्कूल जाती है।
D. वह अच्छा खिलाड़ी है।
उत्तर :- B

180. 'क्या वे लिखेंगे'? वाक्य का भाववाच्य में परिवर्तित रूप है ?
A. क्या वह लिखेगा?
B. क्या वे लिख सकते हैं?
C. क्या उनसे लिखा जाएगा?
D. क्या वे लिख सकेंगे?
उत्तर :- C

181. किस वाक्य में 'निश्चयार्थ वृत्ति' का प्रयोग हुआ है ?
A. हमें सदैव सच बोलना चाहिए।
B. भगवान सबका भला करें।
C. बच्चे ने पुस्तक पढ़ ली है।
D. शायद वह आज आ जाए।
उत्तर :- C

182. इनसे पुस्तक का बहुवचन है?
A. पुस्तकें
B. पत्रिकाएँ
C. ग्रन्थ
D. पुस्तकालय
उत्तर :- A

183. किस वाक्य में 'संप्रदान कारक के परसर्ग (विभक्ति चिह्न)' का प्रयोग हुआ है?
A. वह घर से बाहर आया।
B. लड़का अब अपने पाँव से चलता है।
C. उस जगह एक सभा होने जा रही है।
D. राम के हित लक्ष्मण वन गए थे।
उत्तर :- D

184. इनमें से 'रीतिवाचक क्रिया-विशेषण' से संबंधित वाक्य कौनसा है?
A. यह पत्रिका प्रति माह छपती है।
B. तुम्हारी पुस्तकें यहाँ रखी हुई हैं।
C. सभी बच्चे बाहर खेल रहे हैं।
D. वह अचानक चला गया।
उत्तर :- D

185. निम्न में से मोहन बाजार जा रहा है, इस वाक्य में उद्देश्य है?
A. बाजार
B. घूमना
C. मोहन
D. खरीददारी
उत्तर :- C

186. 'दूसरों का भला करोगे तो तुम्हारा भी भला होगा।' अर्थ की दृष्टि से यह कथन किस प्रकार का है?
A. आज्ञार्थक
B. संकेतार्थक
C. संदेहार्थक
D. विधानार्थक
उत्तर :- B

187. निम्न में से 'संदेहार्थक' कथन कौनसा है?
A. जो काम तुम्हें दिया गया है, उसे देखो।
B. वह नहीं आया इसलिए हम नहीं गए।
C. वह जहाँ रहे, सुख से रहे।
D. आज शाम को शायद वर्षा हो।
उत्तर :- D

188. निम्न में से (^) कोष्ठक में दिया गया चिह्न किसका है?
A. निर्देशक चिह्न
B. लाघव चिह्न
C. हंस पद या त्रुटिपूरक चिह्न
D. योजक चिह्न
उत्तर :- C

९८५. मुरारी कृत "जोधपुर राज्य री ख्यात किस शासक के शासनकाल की रचना है ?
(a) अजीतसिंह
(b) अभयसिंह
(c) भीमसिंह
(d) मानसिंह
Answer : (d) मानसिंह

९८६. "गुण भाष" नामक ग्रंथ की रचना किसके द्वारा की गई थी ?
(a) हेम कवि
(b) बिठू सूजा
(c) केशवदास
(d) शिवदास गाड़ण
Answer : (a) हेम कवि

९८७. "मुंडियार री ख्यात" नामक ग्रंथ में राजस्थान के किस राजवंश का इतिहास वर्णित है ?
(a) प्रतिहार
(b) गुहिल
(c) राठौड़
(d) चौहान
Answer : (c) राठौड़

९८८. किस इतिहासकार को "राजपूताने का अबुलफजल" कहा जाता है ?
(a) मुहणोत नैणसी
(b) दयालदास
(c) मुरारीदान
(d) बांकीदास
Answer : (a) मुहणोत नैणसी

९८९. निम्नलिखित में से बांकीदास द्वारा रचित ग्रंथ नहीं है -
(a) किर्ती कौमुदी
(b) कुकवि बत्तीसी
(c) नीति मंजरी
(d) मान यशो मंडन
Answer : (a) किर्ती कौमुदी

९९०. नागानंद रत्नावली और प्रियदर्शिका के लेखक थे ?
(a) हर्षवर्धन
(b) वात्स्यान
(c) बाणभट्ट
(d) विशाखादत्त
Answer : (a) हर्षवर्धन

९९१. स्वतंत्रता सेनानी श्री केसरीसिंह बारहठ की जन्मस्थली है ?
(a) नसीराबाद
(b) खरवा
(c) शाहपुरा
(d) मांडलगढ़
Answer : (c) शाहपुरा

९९२. किसके नेतृत्व में 25 अप्रैल 1934 को कटराथल में आयोजित विशाल महिला सम्मलेन में हजारों महिलाओं ने भाग लिया ?
(a) किशोरी देवी
(b) उत्तमा देवी
(c) यशोदा देवी
(d) रमा देवी
Answer : (a) किशोरी देवी

९९३. जैसलमेर का गुंडाराज पुस्तक के लेखक निम्न में से कौन थे ?
(a) सागरमल गोपा
(b) माणिक्य लाल वर्मा
(c) जय नारायण व्यास
(d) हीरालाल शास्त्री
Answer : (a) सागरमल गोपा

९९४. डूंगजी-जवाहरजी का संबंध था -
(a) जाट रेजिमेंट से
(b) भील ब्रिगेड़ से
(c) शेखावाटी ब्रिगेड़ से
(d) मीणा ब्रिगेड से
Answer : (c) शेखावाटी ब्रिगेड़ से

९९५. वीरांगना कालीबाई जिसने अपने अध्यापक को बचाने में अपनी जिंदगी दे दी , वह कहां की रहने वाली थी ?
(a) बाँसवाड़ा
(b) सिमलवाड़ा
(c) रास्तापाल
(d) सागवाड़ा
Answer : (c) रास्तापाल

९९६. राजस्थान में लोकनायक के नाम से किन्हें जाना जाता है ?
(a) हरिदेव जोशी
(b) मोहनलाल सुखाड़िया
(c) हीरालाल शास्त्री
(d) जयनारायण व्यास
Answer : (d) जयनारायण व्यास

997. राजस्थान के किस क्रांतिकारी को तिहाड़ जेल में रखा गया -

(a) गोपाल सिंह खरवा
(b) केसरीसिंह बारहठ
(c) अर्जुनलाल सेठी
(d) प्रताप सिंह बारहठ

Answer : (a) गोपाल सिंह खरवा

998. जीवन कुटीर के गीत निम्न में से किसके द्वारा लिखा गया

(a) गोकुल भाई भट्ट
(b) हीरालाल शास्त्री
(c) जयनारायण व्यास
(d) हरिभाऊ उपाध्याय

Answer : (b) हीरालाल शास्त्री

999. वागड़ की बा नाम से किसे जाना जाता है ?

(a) विमला देवी
(b) किशोरी देवी
(c) अंजना देवी
(d) मणि बहन पांड्या

Answer : (d) मणि बहन पांड्या

1000. राजस्थान की मरु कोकिला के नाम से कौन प्रसिद्ध है ?

(a) रमा बाई
(b) तीजा बाई
(c) मांगी बाई
(d) अल्लाह जिल्लाई बाई

Answer : (d) अल्लाह जिल्लाई बाई

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Dear Aspirants, here are the our results in differents exams (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk8S6Wl8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp https://wa.link/l5oubd 1 web.- https://shorturl.at/9NIFM

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
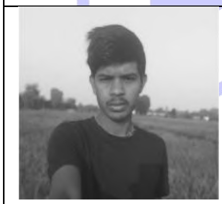	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

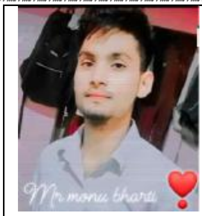	**MONU S/O KAMTA PRASAD**	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
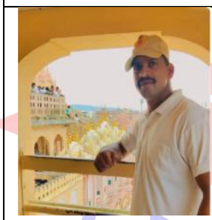	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379 Admit Card HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION	Jind (Haryana)

And many others……

Click on the below link to purchase notes

WhatsApp करें - https://wa.link/l5oubd

Online Order करें - https://shorturl.at/9NIFM

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE